

स्यंदनिका स्त्री. (तत्.) 1. छोटी नदी, नहर 2. थूक या लार की बूंद।

स्यंदनी स्त्री. (तत्.) 1. थूक, लार 2. वह नाड़ी जिसके द्वारा मूत्र शरीर के बाहर निकलता है।

स्यंदिनी स्त्री. (तत्.) 1. वह गाय जिसने एक साथ दो बच्चों को जन्म दिया हो 2. थूक, लार।

स्यंदी वि. (तत्.) 1. चूने, बहने या रिसने वाला 2. तेल चलने वाला।

स्यंध स्त्री. (तत्.) संधि।

स्यंभ पुं. (तद्.) 1. स्वयंभू, परमात्मा 2. शंभु, शिव, महादेव उदा. कुबुधि न जाई जीव की, भावै स्यंभ प्रमोधि-कबीर।

स्यंभुद्वार पुं. (तद्.) ब्रह्मरंध्र उदा. सुरति निरति परचा भया, तब खूले स्यंभुद्वार- कबीर।

स्यमंतक पुं. (तत्.) पुराणों में वर्णित एक प्रसिद्ध मणि जिसकी चोरी का झूठा आरोप श्रीकृष्ण पर लगा था।

स्यमंतपंचक पुं. (तत्.) भागवत में वर्णित एक प्राचीन तीर्थ जहाँ परशुराम ने पितरों का रक्त से तर्पण किया था।

स्यमिक पुं. (तत्.) 1. चींटियों या दीमकों का बनाया हुआ मिट्टी का घर, बाँबी, वल्मीक 2. एक प्रकार का वृक्ष।

स्यमिका पुं. (तत्.) 1. नील का पौधा 2. एक प्रकार का कीड़ा।

स्यमीक पुं. (तत्.) 1. जल, पानी 2. बादल, मेघ 3. समय, काल 4. एक प्राचीन राजवंश 5. दीमकों का भीटा।

स्यात् क्रि.वि. (तत्.) कदाचित, शायद।

स्याद्वाद पुं. (तत्.) 1. जैन दर्शन जिसमें नित्यता, अनित्यता, सत्त्व, असत्त्व आदि में से किसी एक को निश्चित न मानकर कहा जाता है कि स्याद् यही हो, स्याद् वही हो इसे अनेकांतवाद भी कहते हैं 2. उक्त के आधार पर जैन धर्म का दूसरा नाम।

स्याद्वादी पुं. (तत्.) 1. स्यादवाद का अनुयायी समर्थक 2. जैन वि. स्याद्वाद संबंधी, स्यादवाद का।

स्यान वि. (देश.) स्याना।

स्यानप स्त्री. (देश.) सयाना।

स्यानपत स्त्री. (देश.) 1. बहुत अधिक सयाने या चतुर होने की अवस्था, गुण या भाव 2. चालाकी, धूर्तता।

स्यानपन पुं. (देश.) सयानपन।

स्याना वि. (देश.) 1. चतुर 2. धूर्त, चालाक पुं. 1. चतुर पुरुष 2. वयस्क पुरुष जैसे- कुछ वर्षों में तुम्हारी पुत्री स्यानी हो जाएगी 3. भूत-प्रेत उतारने वाला व्यक्ति, ओझा।

स्यानाचारी स्त्री. (देश.) 1. वह नियमित उपहार या कर जो मध्य युग में गाँव के मुखिया को मिलता था 2. सयानपन।

स्यानापन पुं. (देश.) 1. सयानापन, चतुरता 2. धूर्तता चालाकी 3. वयस्कता 4. ओझा का कार्य।

स्यानी स्त्री. (देश.) 1. चतुर स्त्री 2. धूर्त/चालाक स्त्री 3. भूत-प्रेत उतारने वाली स्त्री, झाड़-फूँक करने वाली स्त्री।

स्यापा पुं. (फा.) 1. किसी की मृत्यु पर शोक के कारण कुछ दिनों तक होने वाला रोना-पीटना 2. कुछ जातियों में मृत व्यक्ति के शोक में कुछ दिनों तक घर और संबंधियों की स्त्रियों का प्रतिदिन एकत्र होकर रोने और शोक मनाने की प्रथा मुहा. स्यापा पड़ना- किसी की मृत्यु के शोक के बिना ही जोर-जोर से रोना-चिल्लाना, स्थान का बिल्कुल उजाड़ या सुनसान हो जाना।

स्याबड़ पुं. (तद्.) कृषि. खेत में बीजों की बुवाई करना आरंभ करते समय या फसल काटने के तत्काल बाद उठाया गया उसी खेत की मिट्टी का एक ढेला।

स्याबड़ी स्त्री. (देश.) 1. खेत में जमा फसल की अन्नराशि 2. रास में से पुरोहित आदि को दान के लिए निकालकर रखा गया अनाज।